

OUTSIDE ROOM

The Room That Isn't One Of The Ten



जिलेट बाहर का कमरा

वह कमरा जो दस में से नहीं है

मैंने एक देहाती गाथा लिखी थी, बौद्धिक नहीं, क्योंकि मेरी पढ़ाई मुझे कुछ और करने की इजाज़त ही न देती। इतालवी में 4 अंक लेकर मैं अपना डिप्लोमा सिर्फ़ खेल की उपलब्धियों, एक औरत और एक प्रिंसिपल की बदौलत हासिल कर पाया, जिसने मेरी पाँच लीटर वाइन के तोहफ़े की क़द्र की।

हाहाहाहा।

मैं लोगों को दिमाग़ की एक कसरत देना चाहता था, और उसके लिए न डिग्री चाहिए थी, न पीएचडी। मैंने दस कमरे बनाए थे और सोचा था कि मैंने हर किसी की ज़िंदगी का एक अध्याय बंद कर दिया है, पर मैंने इधर-उधर नज़र दौड़ाई और समझ गया कि मैं कुछ बाहर छोड़ आया हूँ।

क्या?

खुद को।

अपनी कमियों के साथ, अपने ऐबों, अपनी ख़ासियतों, छल वाले हिस्सों, अपनी तुनकमिज़ाजी, हिसाब बराबर करने की अपनी चाह, एक साँचे में बंद बेतुकेपन के साथ, और फिर वह आदत कि दिलचस्प हुए बिना ही लगातार तवज्जो मिलती रहे, और इस बात पर मैं हमेशा मुस्कुरा देता था।

हाँ, मेरी बग़ल में हमेशा कोई न कोई रहा जो मुझे रास्ता दिखाना चाहता था, वे काम जो मुझे करने चाहिए, कैसे करने चाहिए, क्यों करने चाहिए, मानो वह मुझे किसी चीज़ में दीक्षित करना चाहता हो। पर मैं किसी धार्मिक संप्रदाय में नहीं था, न किसी आध्यात्मिक में। मैं अपनी ही ज़िंदगी के भीतर था, जहाँ कुछ सीखना पड़े, यह तो तर्कसंगत था, पर कैसे सीखूँ, यह बताया जाना नहीं।

इसे लंबा न खींचें, क्योंकि हर पाठक थक जाता है और अंत जानना चाहता है। शायद किसी दिन मैं कहानी की शुरुआत में ही अंत लिखना शुरू कर दूँ, ताकि सब समझ जाएँ कि अंत ही इकलौती असली शुरुआत है।

इससे पहले कि मैं बैठकर मौत का इंतज़ार करूँ, मैं हमेशा वह आदर्श जगह ढूँढ़ता रहूँगा जहाँ मरा जाए। पर यक़ीन मानिए, इतने सारे विकल्पों और इतनी सारी संभावनाओं के बीच मुझे एक औरत की बाँहों से बेहतर कोई जगह नहीं मिलती। वह मेरी न भी हो, तो कोई बात नहीं। मुझे ख़ास परवाह नहीं।

हाहाहाहाहा।

यह सबसे अच्छी जगह है, वह जगह जहाँ से सब कुछ शुरू हुआ और जहाँ सब कुछ ख़त्म होता है। पर कोई भी कभी उतना अविस्मरणीय नहीं बनता जितना कोई लिखी हुई चीज़।

फर्दिनांदो

पुनश्च: मैं ज़बान का पक्का आदमी हूँ और औरतें यह पहचानती हैं, और इससे कुछ फीके प्रदर्शनों की भरपाई हो जाती है।